

बगला प्रत्यंगिरा कवच

भगवती बगलामुखी की उपासना कलियुग में सभी कष्टों एवं दुखों से मुक्ति प्रदान करने वाली है।

संसार में कोई कष्ट अथवा दुख ऐसा नहीं है जो [भगवती पीताम्बरा](#) की सेवा एवं उपासना से दूर ना हो सकता हो, बस साधकों को चाहिए कि धैर्य पूर्वक प्रतिक्षण भगवती की सेवा करते रहें।

विनियोगः

ॐ अस्य श्री बगला प्रत्यंगिरा कवच मंत्रस्य [नारद ऋषिः](#) स्त्रिष्टुपछन्दः प्रत्यंगिरा देवता ह्रीं बीजं ह्रूं शक्तिः ह्रीं कीलकं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रत्यंगिरा मम शत्रु विनाशे विनियोगः ।

ॐ प्रत्यंगिरायै नमः प्रत्यंगिरे सकल कामान साधय मम रक्षां कुरु कुरु सर्वान शत्रुन खादय खादय,मारय मारय,घातय घातय, ॐ ह्रीं फट स्वाहा ।

ॐ भ्रामरी स्तम्भिनी देवी क्षोभिणी मोहिनी तथा ।
संहारिणी द्राविणी च जृम्भणी रौद्ररूपिणी ॥

इत्यष्टौ शक्तयो देवि शत्रु पक्षे नियोजताः ।
धारयेत कण्ठदेशे च सर्व शत्रु विनाशिनी ॥

ॐ ह्रीं भ्रामरी सर्व शत्रून भ्रामय भ्रामय ॐ ह्रीं स्वाहा ।
ॐ ह्रीं स्तम्भिनी मम शत्रून स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा ।
ॐ ह्रीं क्षोभिणी मम शत्रून क्षोभय क्षोभय ॐ ह्रीं स्वाहा ।
ॐ ह्रीं मोहिनी मम शत्रून मोहय मोहय ॐ ह्रीं स्वाहा ।
ॐ ह्रीं संहारिणी मम शत्रून संहारय संहारय ॐ ह्रीं स्वाहा ।
ॐ ह्रीं द्राविणी मम शत्रून द्रावय द्रावय ॐ ह्रीं स्वाहा ।
ॐ ह्रीं जृम्भिणी मम शत्रून जृम्भय जृम्भय ह्रीं ॐ स्वाहा ।
ॐ ह्रीं रौद्री मम शत्रून संतापय संतापय ॐ ह्रीं स्वाहा ।

॥ इति बगला प्रत्यंगिरा कवच ॥